आधुनिकता और परंपरा का समावेश

साहित्य अकादेमी द्वारा रचनाकारों के जीवन और लेखन पर एकाग्र विनिबंध प्रकाशन की उत्कृष्ट परंपरा में विद्यानिवास मिश्र पर आधारित मोनोग्राफ 'भारतीय साहित्य के निर्माता: विद्यानिवास मिश्र' गिरीश्वर मिश्र ने लिखा है। **विद्यानिवास मिश्र भारतीय संस्कृति और** उसकी ज्ञान-परंपरा के अतुलनीय वक्ता और विद्वान थे। उन्होंने अपने सर्जनात्मक जीवन में ललित निबंधों के अतिरिक्त आस्वादपरक समीक्षा के साथ ही भाषा-विज्ञान का काम और संस्कृति के व्याख्याता के रूप में ढेरों गंभीर पुस्तकों का प्रणयन किया, जिनमें 'भारतीय भाषा दर्शन की पीठिका', 'हिंदी की शब्द-संपदा', 'महाभारत का काव्यार्थ', 'रामायण का काव्य-मर्म', 'राधा-माधव रंग रंगी' तथा 'हिंदू धर्म: जीवन में सनातन की खोज' उल्लेखनीय हैं।

गिरीश्वर मिश्र ने सात शीर्षकों में बंटे इस गंभीर अध्ययन में उनकी जीवन-यात्रा और निबंध में परंपरा के प्रयोग के अतिरिक्त संस्कृति विमर्श, समकालीन सरोकार और साहित्यिक दृष्टि के माध्यम से एक पूरा भाव-जगत उकेरा है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता की समावेशी उपस्थिति विद्यानिवास मिश्र के लेखन और सरोकारों को बड़ा बनाती है। हजारी प्रसाद द्विवेदी और कुबेरनाथ राय की परंपरा के वाहक मिश्र जी पर यह मोनोग्राफ शोधार्थियों और पाठकों के लिए उपलब्धि जैसा है।

यतीन्द्र मिश्र

भारतीय साहित्य के निर्माता: विद्यानिवास मिश्र
गिरीश्वर मिश्र
विनिबंध
पहला संस्करण, 2023
साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
मूल्य: 100 रुपये